क्षमा ए मोक्षनो दरवाजो छे

स्तवन अने आत्मिक पदो

पालणपुर (मारवाड) निवासी शाह हेमाजी

हेमराजजीनां सुपुत्री अखंड सौभाग्यवती

सद्गत बेन श्री[redacted]ना स्मरणार्थे भेट



[illegible]

पिंडरदास

किंकर पुष्पमाळा पुष्प ओगणीशमु

ॐ श्री गुरुदेवाय नमः

क्षमा ए मोक्षनो दरवाजो छे

स्तवन अने आत्मिक पदो



मालवाडा (मारवाड) निवासी शाह हेमाजी डुंगराजीनां सुपुत्री अखंड सौभाग्यवती सदगत बेन त्रीजांबाईना स्मणार्थे भेट



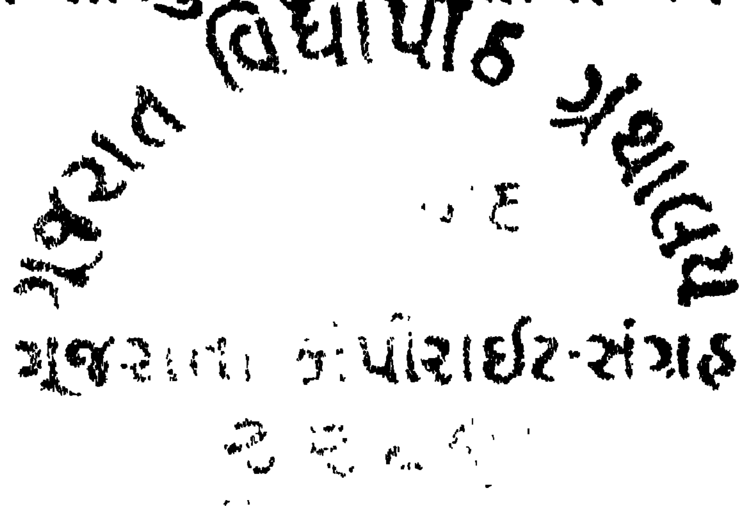
छोरु

किंकरदास

कर्ता अने प्रकाशक

किंकरदास फतासानी पोळ, नवि पोळ, अमदावाद.

संवत १९९७ ना फाल्गुन कृष्ण तृतीया अने रविवार प्रत १०००



आभार दर्शन

आत्म प्रियभाई श्री रुपचंदे तेओनां सदगत बेन त्रीजांबाईना स्मरणार्थे आ पुष्प प्रसिद्ध करवा मने सूचन करवाथी तेओनी मददने लई आ पुष्प हुं जनसमूहमां प्रसिद्ध करी शक्यो जे बदल तेओनो आ स्थळे पुनः पुनः आभार मानु.

छोरु

किंकरदासनां आभार वंदन

धी वीरविजय प्रिन्टीग प्रेसमां केशवलाल सांकळचंद शाहे

छापी. ठे. सलापोस क्रोस रोड–अमदावाद.

उद्गारो

जैन समाजना आंगणे प्रखर विद्वान मुनिराजो तथा पांडीत्यमां पारंगत बनेल महान जीवात्माओना विविध क्रमे रचाएलां स्तवनोनो भक्तिथाळ यशस्वी छे.

विश्वना पंथे वैराग्य अने भक्तिरस वर्षावतां काव्यो में रच्यां छे, छतां भाई रुपचंदनी धगशे स्तवनो लखवानी अपूर्व उर्मीओ मनोमंदिरमां प्रदिप्त थवाथी कार्यशैलीमां गुंथायो.

हरेक स्तवनोमां, प्रभुना दास याने किंकर थवा, तथा प्रभुना पंथे प्रवेशवा, अने आत्मज्ञानी भोमीया वगर, संसारनी भ्रमणता, अने पोताना ज दोषोनी माफी चाहतां, आत्मिक पंथे भक्ति अने वैराग्यनां वचनाम्रतोने व्रषावी स्तवनोनी कृती पूर्ण करी छे.

विद्वान अने महान जीवात्माओना भक्ति थाळ समक्ष, मारो आ थाळ तद्दन नजीवो ज मानी शकाय; छतां भक्तिमस्त जीवात्माओ ए विविध थाळनी रसमय वानगी साथे मारा आ अल्प थाळने स्वीकारी आंतरक्षुधाने संतुष्ट करे एटलीज प्रार्थना.

स्तवन रचवानी शक्ति मारा जेवा पामरमां ना होइ शके! छतां मारी अल्प बुद्धि अने भक्तिनुज आ एक तान छे तेम समजी वांचको मारा श्रमने यथार्थ बनावे, एटलीज प्रेम भिक्षा याचतां विरमु.

भूल निरखतां वांचको क्षमा आपशे एटलीज अभ्यर्थना.

आ सर्व प्यारा प्रभुनीज विभूति छे.

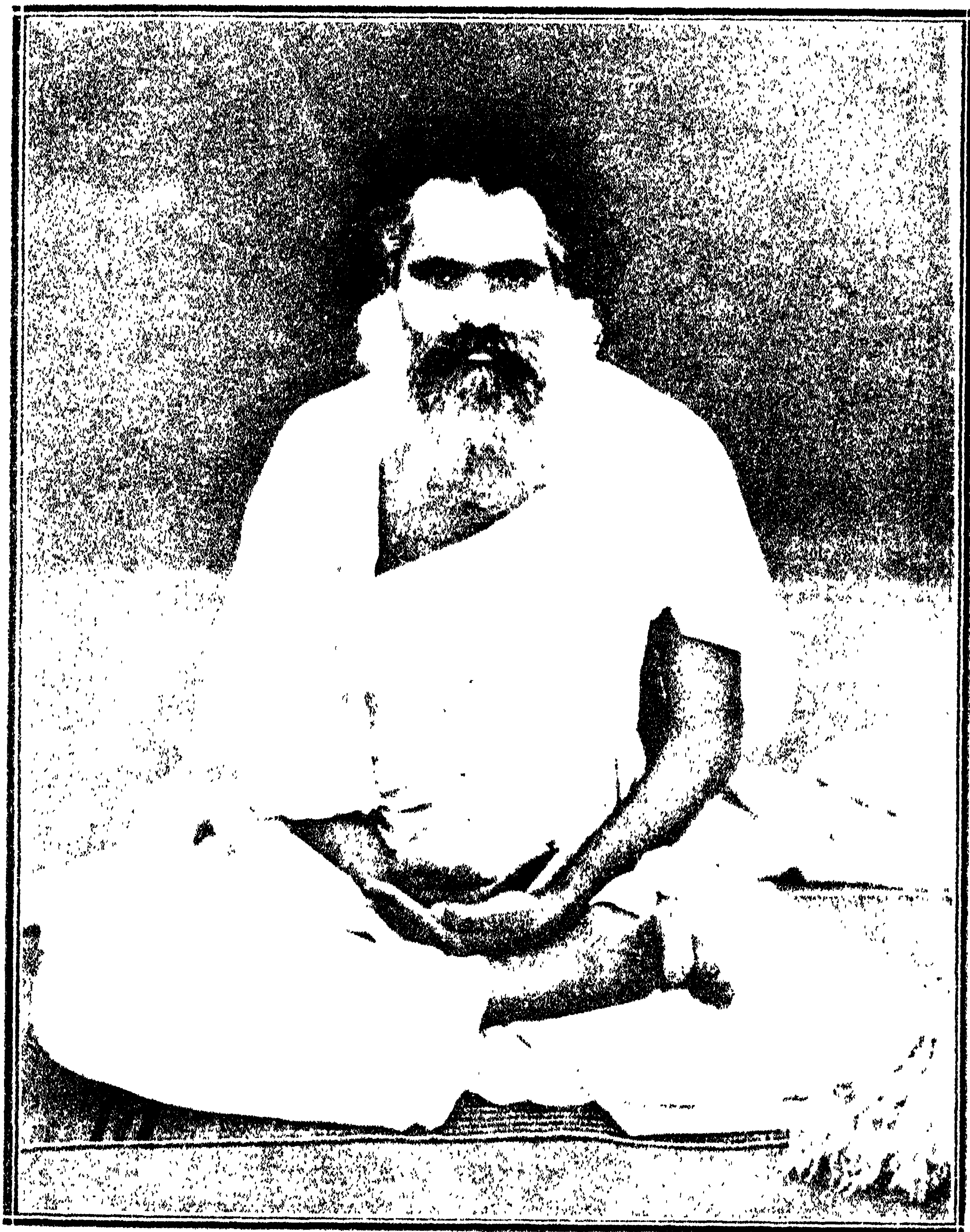
भिक्षुक पर्णकुटी
फतासानी पोळ, नवि पोळ,
अमदावाद.

छोरु
किंकरदास

समर्पण

ज्वलंत अग्नीना भडकामां आध्यात्मिक
शांती रेली कर्मरीपुना जखमने
रुजावनार मारा पतितपावन
श्रीमद्‌योगी भगवंत महात्मा
श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीना
करकमळमां आ पुष्प सहर्षे
समर्पी कृतार्थ थाउं.

छोरु
किंकरदास



ध्यान मूलं गुरु मूर्ति पूजा मूलं गुरु पद ।
मंत्र मूलं गुरु वाक्य मोक्ष मूलं गुरु कृपा ॥

१

श्री रिषभ जीन स्तवन

[गझल]

रिषभ जीन प्राणसे प्यारा
हमारे नेत्र के तारा
सकळ संसार उजीयाळा
प्रीतम प्यारा हमारे तुं....१
मारु माताजीके नंदन
दिपक श्री नाभिराया के
जीनेश्वर आप कहलाया
प्रीतम प्यारा हमारे तुं....२
झळकती जगतमे ज्योति
प्रभो मे क्या करु वर्णन

पूरव के पुन्य से पाया

प्रीतम प्यारा हमारे तुं....३

पतिपत्नी प्रीति कहेते

सती मनमे पति प्यारे

प्रीति उनसे बढे तेरी

प्रीतम प्यारा हमारे तुं....४

रिषभ रक्षा करो मेरी

मुजे आशा प्रभो तेरी

छुडा दो जन्म की फेरी

प्रीतम प्यारा हमारे तुं....५

मुजे आधार हे तेरा

प्रभो मेरा प्रभो मेरा

बचादे बाळ ये तेरा

प्रीतम प्यारा हमारे तुं....६

भवाब्धि बंध को तोडो

सहारा आप का सच्चा

तुम्ही किंकर मुजे करदो

प्रीतम प्यारा हमारे तुं....७

२

श्री अजितजिन स्तवन



[राग–मैं बनकी चीडीयां बनमें बनबन बोलुंगी]

श्री अजीत जीणंद जीतीने
नाद बजायो रे
मन वच कायानी साथ
विजय फळ पायो रे....श्री १

पंथ तुमारो केम निहाळुं
अंध पछी अंधानु गाडु
तुम जेह जीत्यां तेथी हुं
आज हरायो रे....श्री २

ज्ञान कथन नयने नहि भासे
तुम ज्योतिने केम प्रकाशे
हुं चर्म नयनथी भान
भूली भटकायो रे....श्री ३

कोन तुमारो मार्ग बतावे
एह विरल नजरे नहि आवे
नव ज्ञान दिपक मन मंदिर
घोर छवायो रे....श्री ४

आत्म पंथनी श्रेणी चडतां
में लूंटारा अधवच नडता
मद माया मोह थकी हुं
खूब गभरायो रे....श्री ५

अर्ज हमारी उरमां लेजो
मार्ग भूल्याने आश्रय देजो
कहे किंकर बाळक
तुम शरणे हुं आयो रे....श्री ६



३

श्री संभवजिन स्तवन

[गझल]

कदी नहि संभवे एवा
क्षमाना पानने पीधुं
प्रभु संभव तुमे स्वामी
जीणंदा प्राणथी प्यारा....१

क्षमानां सूत्र अपनायां
क्षमाथी मुक्तिने पाया
पूजाया जगतनी मांहे
जीणंदा प्राणथी प्यारा....२

क्षमानां सूत्र अणमोलां
अमोथी केम समजाये
नथी ए हाम अंतरमां
जीणंदा प्राणथी प्यारा....३

प्रभुता पात्र उभरायुं
न संभव एह बतलायुं
जीनेश्वर नाम झळकायुं
जीणंदा प्राणथी प्यारा....४

तमारी जे स्तुति करता
नथी संसारमां फरता
भवाब्धी बंधने हरता
जीणंदा प्राणथी प्यारा....५

नथी भक्ति अमारामां
छतां आशा तमारी छे
हृदयमां पळपळे ध्यावुं
जीणंदा प्राणथी प्यारा....६

जपीशु नित्य भींतरमां
तथापि कंइक समजाशे
पुकारे आपनो किंकर
जीणंदा प्राणथी प्यारा....७

४

श्री अभिनंदनजिन स्तवन



[गझल]

अभिनंदन अभयदाता
जगतना छो पितामाता
प्रभुना सर्व गुण गाता
अभिनंदन अभय स्वामी....१

जीनेश्वरनु बिरुद पाया
जीत्या मद मोहने माया
जीणंदा ज्योत झळकाया
अभिनंदन अभय स्वामी....२

जगतथी जे हणातु नहि
हरण तेनु कर्यु स्वामी
निशानी मुक्तिनो वामी
अभिनंदन अभय स्वामी....३

अभय दातार पद पाया
अमीनां पान वरसाया
अविचळ प्रेम उभराया
अभिनंदन अभय स्वामी....४

जगतमां ज्यां निहाळु त्यां
बधे मतभेदना झगडा
बतावे सर्व पोतानु
अभिनंदन अभय स्वामी....५

कदापि हठ करी आवुं
नयनमां पंथ नहि सूझे
मळे नहि भोमीयो एवो
अभिनंदन अभय स्वामी....६

त्हमारो दास बनवाने
निरंतर प्रार्थना करतो
गुजारे आपनो किंकर
अभिनंदन अभय स्वामी....७



५

श्री सुमतिजिन स्तवन



[राग–छोटासा बलमा मेरे आंगणे पे गील्ली खेले]

सुमति जिन शिव सुख गामी
पंचम तीर्थंकर कहेवाया
बुद्धिने शुद्ध करी
वीतराग रुपे जगमां भजवाया....१

सुमति के संगे कुमति
नाश करके ज्योत जगाया
जीन शासन देव महीं तुम
नाथ निरंजन पदने पाया....२

बुद्धिमां वीर मनाया
सत्य दिपक जगमां प्रगटाया
मस्तीना महान प्रभावे
कर्म रीपुनी खाख बनाया....३

भवनगरे बहु भटकाणो
मारु नहि समजाणु मुजने
मनडाने केम मनावु
चर्ण पडी विनवु छु तुजने....

भिक्षुक हुं चरणे आयो
दीन दातारी भिक्षा आपो
सुमति जिन अंतर्यामी
किंकरने तुम चरणे स्थापो....



६

श्री पद्मजिन स्तवन

[राग–पार्श्व प्रभु प्यारा वामा माताजी के नंद]

पद्म प्रभु प्यारा पीयु पीयु नित्ये वदाय
प्यारा प्रीतमजो व्हाला व्हालमजी
शीष एना चरणे झूकाय....पद्म १

छट्ठा श्री पद्म प्रभु आतमनु साधीयुं
नाम नित्य जगमां पूजाय....पद्म २

मायामां रमतो हुं भक्तिथी चेतीयो
प्रभु प्रभु नित्ये भजाय....पद्म ३

पाप नाश थाशे तो मुक्तिने पामशु
अम्रतनां पान उभराय....पद्म ४

केम करी पद्म प्रभु पंथडो निहाळु
पीयु पीयु अंतरमां थाय....पद्म ५

प्रेम धार वरसे जो भक्तिना नीरनी
प्यास मारा दीलनो छीपाय...पद्म ६

पद्म प्रभु प्रोत गुंथी अंतरना तारथी
दास बाळ छुटो ना थाय....पद्म ७



७

श्री सुपार्श्वजिन स्तवन

[प्रभातीयुं]

श्री सुपार्श्व जिन साचो स्वामी
चरणे शीष झूकावुं रे
अंतर जामी आतम रामी
नित्य हृदयमां ध्यावुं रे....१

आप प्रभु पदवोने पाम्या
वाळ ढूंडे संसारे रे
सप्तम जीनवर नाथ निरंजन
त्हारी सहाय अमारे रे....२

जनम मरणनी खाइ महोमे
विधविध रुप धरायां रे
पुन्य प्रतापे आज त्हमारां
भक्तिजळ उभरायां रे....३

मारु रुप नहि मे जोयुं
प्रभु पद केम पिछाणु रे

१७

श्री कुंथुजिन स्तवन

[राग–श्रेयांसनाथ स्वामी अरजी प्रभो स्वीकारो]

अब तो दया व्रषा दे
कुंथु जीणंद स्वामी
भव रोग तुं मीटा दे
कुंथु जीणंद स्वामी. १

मनडु दुराध्य साध्युं
ए हम कभी न माने
मुज साधके वता दे
कुंथु जीणंद स्वामी. २

शक्ति नहि तथापि
मुखसे पूकार करते
तुम चर्णमे विनवते
कुंथु जीणंद स्वामी. ३

प्रभु साधके पूजाया
जिनवर तुमे कहाया
मुक्ति बिरुद पाया
कुंथु जीणंद स्वामी. ४

वचनो तुमारा भूलके
विष निंद मेही सोता
घटमे कभी न शोचा
कुंथु जीणंद स्वामी. ५

निजका नहि विचारा
परदोष में निहाळा
अब आप हे सहारा
कुंथु जीणंद स्वामी. ६

भवदुःख से तडफते
तेरा चरण मे पडते
किंकर पूकार करते
कुंथु जीणंद स्वामी. ७

१८

श्री अरजिन स्तवन

[राग–गुणवंती गुजरात अमारी गुणवंती गुजरात]

अर जिनवरनी पासे जइये
भक्ति जळ भरवा

चालो चालो प्रेम सलुणा
भव सिंधु तरवा–अर १

अनंत गुणी अरनाथ प्रभु
गुणो समजावे कोन विभु

भय हरनार प्रभुनी पासे
जइये जळ भरवा–अर २

त्रिविध अग्निना ताप हरे
नयनमां झरमर ज्योत झरे

प्रभु प्रभुनु नाम समरतां
जइये जळ भरवा–अर ३

परम शुद्धि पदने पाया
जिनेश्वर जगमां कहेवाया
जिनवर जिनवर जपतां जइए
भक्ति जळ भरवा—अर ४

ग्रहो नक्षत्र अने तारा
प्रभुनी ज्योति जयकारा
अविचळ तेज निरखवा जइए
भक्ति जळ भरवा—अर ५

विविध रीतिये ज्योति भासे
विना भक्ति नहि समजाशे
प्रीतम प्रीतमना शरणे जइये
भक्ति जळ भरवा—अर ६

कृपा दातार कृपा करजो
प्रभु भवभयनां दुःख हरजो
किंकर बाळ थवाने जइये
भक्ति जळ भरवा—अर ७



१९

श्री मल्लीजिन स्तवन

[राग–हुं तो भक्तिमां झूलती कुमारिका]

मल्लीनाथ मनडामां नित्य हुं ध्यावतो
प्रभु चरणोमां शीषने झूकावतो–१
संसारे सुख नहि आफतनां झाडवां
प्रभु भक्तिनु तान हुं मचावतो–२
कर्म तणी कोकीयारी मनने मुंझावती
हृदय मंदिरनी आग हुं बुझावतो–३
अंतरना प्राणनाथ अरजो स्वीकारजो
मारा मनडामां नित्य गुण गावतो–४
दुनियामां सर्व दुःखी आशामां झूलतां
प्रभु मस्तिनी ज्योत हुं जगावतो–५
पळपळ हुं ध्यान धरुं मल्ली जीणंदनु
हुं तो भक्तिनी आरती उतारतो–६
किंकर बाळ थवा पळपळ हुं ध्यावतो
नित्य हैयामां तान उभरावतो–७

२०

श्री मुनिसुव्रतजिन स्तवन

[राग–अभिनंदनजिन दरसन तलसीए]

मुनिसुव्रत जिन दर्शन दुर्लभ छे
तुंहो तुंही जगनाथ
कीम करी पावुं हुं दर्शन आपनां
अवधी छे एह वात–१

कलह मच्यो छे कर्म रीपु तणो
दुःख तणो नहि पार
मोह लूंटारा आतम धन लूंटे
कोण हवे आधार–२

भेद अनंता तुज दर्शन विषे
विघविध भासे प्रकार
मुज मन तलसे रे तुज दर्शन विषे
लगनी मनमां अपार–३

तलस तलसतो रे चेतन माह्रो
करगरतो निरधार
आतम साधे ए दर्शन पामता
चर्ण पडूं वारवार—४
मुनि सुव्रत जिन अरजी ध्यावजो
तुंही तुंही चरणे प्रणाम
आत्म समाधि अविचळ दीसती
किंकर मनडुं विराम—५



२१

श्री नमीजिन स्तवन

[राग—सुंदीर शामळीया]

नमी जिन नाथ निराळा
निशदिन स्मरण करुं
मनमंदिर अविकारा
पळ पळ ध्यान करुं—१

नाथ निरंजन आप कहाया
सकळ जगतमां नित्य भजाया
भक्तिजळ वरसाया
पळपळ ध्यान करुं–२

आप विना नहि साथ अमारो
कोई नहि जगमां आधारो
भवसिंधुथी तारो
पळपळ ध्यान करुं–३

तुम गुणनी स्तवना नहि करतो
मुज कथनी हुं नित्य उचरतो
ळळीळळी चरणे पडतो
पळपळ ध्यान करुं–४

नमी जिनेश्वर अरज स्वीकारो
जन्म मरणनां दुःखडां टाळो
किंकर बाळ उगारो
पळपळ ध्यान करुं–५

२२

श्री नेमीजिन स्तवन

[जाओ जाओ रे मेरे साधु]

अरजी सूण लो ओ नेम नगीना
राजुलना भरथार
जान लइ निसर्यांता त्यारे
हर्ष तणो नहि पार
पशुडांनो पोकार सूणीने
पीछ करी ततकाळ–अरजी–१

राजुल गोखे राह निरखती
रडती आंसुधार
पीयु अमारा केम रिसाया
मुज हैयाना हार–अरजी २
मन तलसातुं तन तलसातुं
तलसे राजुल नार
जग वैभवने ठोकर मारी
लाध्यो संयम भार–अरजी ३

नेम बन्या तिर्थंकर स्वामी
बावीशमा जिनराज
माया छोडी मनडु साध्युं
नमुं नमुं शीरताज—अरजी ४

नेम जिणंदा नाथ अमारा
अम नयनोना तार
बाळक तुम भक्तिने माटे
रडतो आंसुधार—अरजी ५

भवदुःख भंजन पाप निकंदन
जग पाळक कीरतार
किंकर पाय पडी करगरतो
भवसिंधुथी तार---अरजो ६



२३

श्री पार्श्वजिन स्तवन

[राग–आबू पर्वत गजावे अरे योगी तुं]

प्रभु पारस रुप बतावो मने
हुं तो भक्तिना थाळ चढावुं तने
वामानंदन पार्श्व प्रभुजी तमे–१
पर रुप निहाळे तो पारस कहे
एवो कोण झवेरी मळे अमने
तुंही भक्तिथी भान थशो मनने–२
प्रभु त्रेवीशमा जीनराज तमे
शेष नागनी फेण तमो उपरे
तुंही चरणोमां बाळक नित्य नमे–३
हुं तो प्रेमना पुष्प धरुं चरणे
चित्त चंदन धूप उवेखुं तने
वीतराग दशामां पूजाओ तमे–४
महा कष्ट सहो प्रभु आप बने
हुं तो त्यागी स्वीकारुं प्रभु तुजने
दास नित्य नमे छे निरंजनने–५

२४

श्री महावीरजिन स्तवन

[गझल]

जगतना सर्व देवोमां
प्रभु महावीर तुं मोटो
पूजाया विश्वनी मांहे
शरण तारुं प्रभो मुजने–१

सिद्धारथ रायना नंदन
दिपावी कुंख त्रिशलानी
नमन ए वीर माताने
शरण तारुं प्रभो मुजने–२

अढळ रिद्धि अने सिद्धि
सिंहासन राजगादीनुं
पलकमां ठोकरे मार्युं
शरण तारुं प्रभो मुजने–३

अमीरी वैभवो छोडी

फकीरी आत्ममां लीधो

झूकाया त्यागना पंथे

शरण तारुं प्रभो मुजने–४

भयानक घोर जंगलमां

विचरीया मुक्तिने माटे

क्षमानां सूत्र भजवायां

शरण तारुं प्रभो मुजने–५

अभिग्रह कारमा कीधा

तपस्या महान आरंभो

वितायां मौनमां वर्षो

शरण तारुं प्रभो मुजने–६

समाधि आत्म मंदिरमां

कीधां चकचूर कर्मोने

पछी सर्वज्ञ कहेवाया

शरण तारुं प्रभो मुजने–७

गुजारुं जुज हुं भिक्षा
दयासिंधु दया करजो
महा भडवीर योद्धो तुं
शरण तारुं प्रभो मुजने–८

अरे क्यां रंक ने राजा
दशा छे आज ए मारी
छतां किंकर थवा माटे
शरण तारुं प्रभो मुजने---९



२५

श्री पारसजिन स्तवन

[राग–कल्याण]

पावन कर पारस जिन स्वामी
आप हमारे अंतर यामी
जळ बीन सागर तरसे मछीयां
तुम दर्शन बीन रडतो अखीयां
दरश दीखा दे अंतरयामी....पावन १

प्यास छीपा दे नाथ हमारी
अगन जलीहे दीलमे भारी
शान्त कीये शान्तिरस वामी....पावन २

एकही बुंद मुजे को दीजीये
आश प्रभुजी पुरन कीजोये
अरज सुनो अब अंतरयामी....पावन ३

पारस ज्योत प्रगट परमातम
नाथ तुमारा अविचळ शासन
अजर अमर सुखधाम सुकानी....पावन ४

किंकर बाळक शीष झूकावे
उस बीन नैयां पार न पावे
अमृतमय जीनवरकी वाणी....पावन ५

२६

श्रीजीरावलपार्श्वजिन स्तवन

[गझल]

जीरावल पार्श्व जिन स्वामी
हमारे आप शिवगामी

निशानी मोक्ष की वामी
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....१

दीसे मंदिर अलबेलुं
अजब हे ! पहाडकी घटना

बिराजो आपश्री बीचमे
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....२

प्रकाशी ज्योत पारसकी
झळकती रोशनी जगमे

वामा माताश्रीके नंदन
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....३

१७

श्री कुंथुजिन स्तवन

[राग-श्रेयांसनाथ स्वामी अरजी प्रभो स्वीकारो]

अब तो दया व्रषा दे
कुंथु जीणंद स्वामी
भव रोग तुं मीटा दे
कुंथु जीणंद स्वामी. १

मनडु दुराध्य साध्युं
ए हम कभी न माने
मुज साधके बता दे
कुंथु जीणंद स्वामी. २

शक्ति नहि तथापि
मुखसे पूकार करते
तुम चर्णमे विनवते
कुंथु जीणंद स्वामी. ३

प्रभु साधके पूजाया
जिनवर तुमे कहाया
मुक्ति बिरुद पाया
कुंथु जीणंद स्वामी. ४

वचनो तुमारा भूलके
विष निंद मेही सोता
घटमे कभी न शोचा
कुंथु जीणंद स्वामी. ५

निजका नहि विचारा
परदोष में निहाळा
अब आप हे सहारा
कुंथु जीणंद स्वामी. ६

भवदुःख से तडफते
तेरा चरण मे पडते
किंकर पूकार करते
कुंथु जीणंद स्वामी. ७

१८

श्री अरजिन स्तवन

[राग–गुणणंती गुजरात अमारी गुणंवती गुजरात]

अर जिनवरनी पासे जइये
भक्ति जळ भरवा

चालो चालो प्रेम सलुणा
भव सिंधु तरवा–अर १

अनंत गुणी अरनाथ प्रभु
गुणो समजावे कोन त्रिभु

भय हरनार प्रभुनी पासे
जइये जळ भरवा–अर २

त्रिविध अग्निना ताप हरे
नयनमां झरमर ज्योत झरे

प्रभु प्रभुनु नाम समरतां
जइये जळ भरवा–अर ३

परम शुद्धि पदने पाया
जिनेश्वर जगमां कहेवाया
जिनवर जिनवर जपतां जइए
भक्ति जळ भरवा—अर ४

ग्रहो नक्षत्र अने तारा
प्रभुनी ज्योति जयकारा
अविचळ तेज निरखवा जइए
भक्ति जळ भरवा—अर ५

विविध रीतिये ज्योति भासे
विना भक्ति नहि समजाशे
प्रीतम प्रीतमना शरणे जइये
भक्ति जळ भरवा—अर ६

कृपा दातार कृपा करजो
प्रभु भवभयनां दुःख हरजो
किंकर बाळ थवाने जइये
भक्ति जळ भरवा—अर ७



१९

श्री मल्लीजिन स्तवन

[राग–हुं तो भक्तिमां झूलती कुमारिका]

मल्लीनाथ मनडामां नित्य हुं ध्यावतो
प्रभु चरणोमां शोषने झूकावतो–१
संसारे सुख नहि आफतनां झाडवां
प्रभु भक्तिनु तान हुं मचावतो–२
कर्म तणो कोकीयारी मनने मुंझावती
हृदय मंदिरनी आग हुं बुझावतो–३
अंतरना प्राणनाथ अरजो स्वीकारजो
मारा मनडामां नित्य गुण गावतो–४
दुनियामां सर्व दुःखी आशामां झूलतां
प्रभु मस्तिनी ज्योत हुं जगावतो–५
पळपळ हुं ध्यान धरुं मल्ली जीणंदनु
हुं तो भक्तिनी आरती उतारतो–६
किंकर बाळ थवा पळपळ हुं ध्यावतो
नित्य हैयामां तान उभरावतो–७

२०

श्री मुनिसुव्रतजिन स्तवन

[राग–अभिनंदनजिन दरसन तलसीए]

मुनिसुव्रत जिन दर्शन दुर्लभ छे
तुंहो तुंही जगनाथ
कीम करी पावुं हुं दर्शन आपनां
अवधी छे एह वात–१

कलह मच्यो छे कर्म रीपु तणो
दुःख तणो नहि पार
मोह लूंटारा आतम धन लूंटे
कोण हवे आधार–२

भेद अनंता तुज दर्शन विषे
विघविध भासे प्रकार
मुज मन तलसे रे तुज दर्शन विषे
लगनी मनमां अपार–३

तलस तलसतो रे चेतन माहरो
करगरतो निरधार
आतम साधे ए दर्शन पामता
चर्ण पडूं वारवार—४
मुनि सुव्रत जिन अरजी ध्यावजो
तुंही तुंही चरणे प्रणाम
आत्म समाधि अविचळ दीसती
किंकर मनडुं विराम—५



२१

श्री नमीजिन स्तवन

[राग—सुंदीर शामळीया]

नमी जिन नाथ निराळा
निशदिन स्मरण करुं
मनमंदिर अविकारा
पळ पळ ध्यान करुं—१

नाथ निरंजन आप कहाया
सकळ जगतमां नित्य भजाया
भक्तिजळ वरसाया
पळपळ ध्यान करुं–२

आप विना नहि साथ अमारो
कोई नहि जगमां आधारो
भवसिंधुथी तारो
पळपळ ध्यान करुं–३

तुम गुणनी स्तवना नहि करतो
मुज कथनी हुं नित्य उचरतो
ळळीळळी चरणे पडतो
पळपळ ध्यान करुं–४

नमी जिनेश्वर अरज स्वीकारो
जन्म मरणनां दुःखडां टाळो
किंकर बाळ उगारो
पळपळ ध्यान करुं–५



२२

श्री नेमीजिन स्तवन

[जाओ जाओ रे मेरे साधु]

अरजी सूण लो ओ नेम नगीना
राजुलना भरथार
जान लइ निसर्यांता त्यारे
हर्ष तणो नहि पार
पशुडांनो पोकार सूणीने
पीछ करी ततकाळ–अरजी–१

राजुल गोखे राह निरखती
रडती आंसुधार
पीयु अमारा केम रिसाया
मुज हैयाना हार–अरजी २
मन तलसातुं तन तलसातुं
तलसे राजुल नार
जग वैभवने ठोकर मारी
लाध्यो संयम भार–अरजी ३

नेम बन्या तिर्थंकर स्वामी
बावीशमा जिनराज
माया छोडी मनडु साध्युं
नमुं नमुं शीरताज–अरजी ४

नेम जिणंदा नाथ अमारा
अम नयनोना तार
बाळक तुम भक्तिने माटे
रडतो आंसुधार–अरजी ५

भवदुःख भंजन पाप निकंदन
जग पाळक कीरतार
किंकर पाय पडी करगरतो
भवसिंधुथी तार---अरजो ६



२३

श्री पार्श्वजिन स्तवन

[राग–आबू पर्वत गजाबे अरे योगी तुं]

प्रभु पारस रुप बतावो मने
हुं तो भक्तिना थाळ चढावुं तने
वामानंदन पार्श्व प्रभुजी तमे–१
पर रुप निहाळे तो पारस कहे
एवो कोण झवेरो मळे अमने
तुंही भक्तिथी भान थशे मनने–२
प्रभु त्रेवीशमा जीनराज तमे
शेष नागनी फेण तमो उपरे
तुंही चरणोमां बाळक नित्य नमे–३
हुं तो प्रेमना पुष्प धरुं चरणे
चित्त चंदन धूप उवेखुं तने
वीतराग दशामां पूजाओ तमे–४
महा कष्ट सहो प्रभु आप बने
हुं तो त्यागी स्वीकारुं प्रभु तुजने
दास नित्य नमे छे निरंजनने–५

२४

श्री महावीरजिन स्तवन

[गझल]

जगतना सर्व देवोमां
प्रभु महावीर तुं मोटो
पूजाया विश्वनी मांहे
शरण तारुं प्रभो मुजने–१

सिद्धारथ रायना नंदन
दिपावी कुंख त्रिशलानी
नमन ए वीर माताने
शरण तारुं प्रभो मुजने–२

अढळ रिद्धि अने सिद्धि
सिंहासन राजगादीनुं
पलकमां ठोकरे मार्युं
शरण तारुं प्रभो मुजने–३

अमीरी वैभवो छोडी
फकीरी आत्ममां लीधो
झूकाया त्यागना पंथे
शरण तारुं प्रभो मुजने–४

भयानक घोर जंगलमां
विचरीया मुक्तिने माटे
क्षमानां सूत्र भजवायां
शरण तारुं प्रभो मुजने–५

अभिग्रह कारमा कीधा
तपस्या महान आरंभो
वितायां मौनमां वर्षो
शरण तारुं प्रभो मुजने–६

समाधि आत्म मंदिरमां
कीधां चकचूर कर्मोने
पछी सर्वज्ञ कहेवाया
शरण तारुं प्रभो मुजने–७

गुजारुं जुज हुं भिक्षा
दयासिंधु दया करजो
महा भडवीर योद्धो तुं
शरण तारुं प्रभो मुजने—८

अरे क्यां रंक ने राजा
दशा छे आज ए मारी
छतां किंकर थवा माटे
शरण तारुं प्रभो मुजने---९



२५

श्री पारसजिन स्तवन

[राग—कल्याण]

पावन कर पारस जिन स्वामी
आप हमारे अंतर यामी
जळ बीन सागर तरसे मछीयां
तुम दर्शन बीन रडती अखीयां
दरश दीखा दे अंतरयामी....पावन १

प्यास छीपा दे नाथ हमारी
अगन जलीहे दीलमे भारी
शान्त कीये शान्तिरस वामी....पावन २

एकही बुंद मुजे को दीजीये
आश प्रभुजी पुरन कीजोये
अरज सुनो अब अंतरयामो....पावन ३

पारस ज्योत प्रगट परमातम
नाथ तुमारा अविचळ शासन
अजर अमर सुखधाम सुकानो....पावन ४

किंकर बाळक शीष झूकावे
उस बीन नैयां पार न पावे
अमृतमय जोनवरकी वाणी....पावन ५

२६

श्रीजीरावलपार्श्वजिन स्तवन

[गझल]

जीरावल पार्श्व जिन स्वामी
हमारे आप शिवगामी
निशानी मोक्ष की वामी
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....१

दीसे मंदिर अलबेलुं
अजब हे! पहाडको घटना
बिराजो आपश्री बीचमे
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....२

प्रकाशी ज्योत पारसकी
झळकती रोशनी जगमे
वामा माताश्रीके नंदन
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....३

तुमी दर्शन परम पुन्ये
करत हे भाग्यसे प्राणी
अमोली रत्नको खाणी
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....४

अगम हे आपकी कथनो
मुखे वर्णन नहि करते
अमीरस नेत्रसे झरते
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....५

तुमी प्यारा तुमी प्यारा
हमारे नेत्र के तारा
वषादो प्रेमको धारा
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....५

ओगणी छन्नु महाशुक्ले
दिवस नवमी शनिवारे
कीधी यात्रा पुरण हर्षे
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....७

पूकारे बाळ ये तेरा
दीखादो रुप पारस का
गुजारे आप के किंकर
प्रभोश्री पार्श्व जिन स्वामी....८



२७

श्री महावीर जिन स्तवन

[राग–गुरुवर गुरुवर गुरुवर तमने क्रोडो प्रणाम]

सिद्धारथ ना नंदन प्रभुने क्रोडो प्रणाम
क्षत्रिय कुळमां जन्म धराया
आत्म पूजारी आप कहाया
संयम भार वहाया प्रभुने क्रोडो प्रणाम....१

धर्म धुरंधर वीर गवाया
कर्म रीपुनी खाख बनाया
क्षमा पाठ भजवाया प्रभुने क्रोडो प्रणाम....२

जग मायाने जडथो भागी
प्रभु प्रभुमां लगनी लागी
घटमां ज्योति जागी प्रभुने क्रोडो प्रणाम....३
विषम आगना ताप बुझाया
आप सकळ संसार भजाया
तिर्थंकर पद पाया प्रभुने क्रोडो प्रणाम....४
हुं पण एक भिखारी ह्वारो
जन्म मरणनां दुःख संहारो
ककर बाळ उगारो प्रभुने क्रोडो प्रणाम....५



२८

श्री महावीर जिन स्तवन

[राग–जाओ जाओ रे मेरे साधु]

मन भजले श्री महावीर जीनवर
जगके तारणहार.
चोवीसमा तिर्थंकर स्वामी
आप हमे आधार
भवसिंधु से पार लगादो
नैया हमरी तार रे....मन १

सिद्धारथ राजा के नंदन
अम नयनो के तार
त्रिशला माता कुक्ष दिपाई
छो जीवके प्रतिपाळ रे....मन २

राज अरी वैभव को तजके
छोड दीया संसार
दुनियादारी जुठ मनाया
लाद्या संयम भार रे....मन ३

त्याग पंथमे आप झूकाया
एकलडा निरधार
क्षमा सूत्रकी माळ भजाई
अम हैया के हार रे....मन ४

कर्म कोया चकचूर प्रभुने
दीनबंधु दातार
किंकर बाळक आप चरणमे
नमते वारंवार रे....मन ५

२९

श्री महावीर जिन स्तवन

[राग–ओ नाथ तमारी मनहर मूर्ति जोइ जोइ मन ललचाय]

महावीरजी अर्ज स्वीकारो
बाळक रडतो आंसुधार
तुं एक मने आधारो
दुःखडां जन्म मरणनां वार....१

शिव सुख पदवीना गामी
जुग जुगमां किर्ती जामी
हुं चरण पडु शीरनामी
दुःखडां जन्म मरणनां वार....२

त्रण भुवन मही भजवाया
प्रभु जग पाळक कहेवाया
घट घटमां गुण गवाया
दुःखडां जन्म मरणनां वार....३

दीन दुःख भंजन दातारी
बाळकने स्हाय तुमारी
तुंही पदनी छे बलीहारी
दुःखडां जन्म मरणनां वार....४

भिक्षा माटे हुं आयो
भक्तिनो रस उभरायो
किंकर मन एक मनायो
दुःखडां जन्म मरणनां वार....५



३०

श्री महावीर जिन स्तवन

[राग—हे रंग भीना नेम नगीना]

जग उद्धारक वीर जीणंदा
बाळक आप बचावी ल्यो
तुंही तुंहीना शरणे आया
शिष्य गणीने तारी ल्यो....१

घोर गगनमां घूमी रहेला
अंधकारमां अथडेला
समज छतां पण भान भूलेला
अनाथ बाळ उगारी ल्यो....२

मोह मानमां मस्त बनेला
मणीधरमां सपडायेला
मायाना महेमान थयेला
आश्रितने अपनावी ल्यो....३

परमां निजनु भान भूलेला
जग मायामां झकडेला
बंधनमांथी मुक्त थवाने
भक्ति पाठ शीखावी ल्यो....४

जन्म मरणनां दुःखडां टाळो
अरजी आप स्वीकारी ल्यो
बाळक किंकरदास त्हमारा
भवसागरथी तारी ल्यो....५



गातम स्वामीनो विलाप

[राग–ओधवजी संदेशो कहेजो मारा श्यामने]

जग उद्धारक महावीर तमने विनवुं
 वर्धमान श्री चोवोशमा जिनराज जो
मन मंदिरमां रटना करतो आपनी
 वीर वीर विण कोण उगारे जहाज जो. १
सिद्धारथना नंदन व्हाला वीर तुं
 त्रिशला माता कुक्ष दिपावण हार जो
राज अरी वैभवने छोडी चालीया
 पंच महाव्रत लाद्यो संयम भार जो. १
किशोर वयमां ग्रहस्थाश्रमथी निसर्या
 यौवनवयमां साधुपद लेवाय जो
मार्ग वर्यो अंतरमां आतम ज्ञाननो
 परम पुरुषना पंथे नैया जाय जो. ३
नंदीवर्धन बंधव केरी प्रीतडो
 त्यागी विचर्या वनवगडाने पहाड जो
घोर विकट जंगलमां विचर्या वीरजी
 कर्म तणी ओळंगो दवली वाड जो. ४

बार वरस तप घोर अभिग्रह आकरा
    अवधि कष्टो सहन कर्यां भगवान जो
कान मही गोवाळे खीला ठोकीया
    तोए तजी नहि धीर प्रभु बळवान जो. ५

खीला ज्यारे कान महीथी काढीया
    इहां प्रभुए पाडी मोटी चीस जो
एह पछी सर्वज्ञ थया श्री वीरजी
    गौतम गणधर बन्या प्रभुना शिष्य जो. ६

वीर वीर हुं मोंघो माळा मानतो
    वीर हमारा मनमंदिरना प्राण जो
तुंही तुंहीमां जपतो माळा आपनी
    तोय विखुटो केम कोधो भगवान जो. ७

ध्यान करु हुं पळपळ घटमां आपनु
    नाथ निरंजन छो जीवना प्रतिपाळ जो
विरह थकी अंतरमां आंसु सारतो
    करगरतो प्रणमे छे गौतम बाळ जो. ८

अंत समयमां रंक तमारो विसर्या
दया करो ओ दीनबंधु भगवान जो
आप चरणमां लेजो मुजने तातजी
गौतम स्वामी पाम्या केवळज्ञान जो. ९

एह तत्वनी भीक्षा हुं मागी रह्यो
गजा वगरनो केम उठावुं भार जो
परम कृपा जो प्रगटे घटमां आपनी
तो हुं पामु आप तणो आधार जो. १०

भव भ्रमणानी खाइ मही हुं आथडु
आप विना प्रभु कोण बतावे पंथ जो
शांत सुधा नीर नित्य मुखे वहेतु रहे
आप हमारा नाथ नगीना कंथ जो. ११

परम कृपाळु परम दयाळु सांभळो
अनाथ जनना एक तमे आधार जो
दीन दुःख भंजन विनती सुणजो माहरी
किंकर बाळने भवसागरथी तार जो. १२

॥ ॐ श्री गुरुदेवाय नमः ॥

आत्मिक पदो

१

[गझल]

भूलीश हुं जगतनी माया
　　प्रभुजी नहि भूलु तमने
दया दातार दीनबंधु
　　प्रभुजी नहि भूलु तमने....१
कदापि महेलमां सूतो
　　रखडतो शहेर के रस्ते
सुखी हउं के दुःखी हउं पण
　　प्रभुजो नहि भूलु तमने....२
बनु हुं रंक के राजा
　　कदापि शेठ दुनियानो
अमीरी के फकिरीमां
　　प्रभुजी नहि भूलु तमने....३

बगीचा बागमां म्हालु
कदापि झुंपडो वासो
अगर हुं पर्ण कुटीमां
प्रभुजो नहि भूलु तमने....४

हिंडोळा खाटमां झुलतो
कदापि भीख मागु हुं
फना थइने फरु तो पण
प्रभुजी नहि भूलु तमने....५

दुःखोना डुंगरो तूटे
कदी आखु जगत रुठे
परंतु प्राणना भोगे
प्रभुजी नहि मूलु तमने....६

जीवनना धमपछाडामां
अगर म्रत्यु बिछानामां
मरणना श्वास लेतां पण
प्रभुजी नहि भूलु तमने....७

पूर्या मन मंदिरे व्हाला
पछीथी क्यां जवाना छो
दिवानो दास किंकर कहे
प्रभुजो नहि भुलु तमने....८

२

[राग—कल्याण]

जय जय जय भगवान निराळा
तुम बीन कोइ न तारणहारा....जय १
विश्वंभर प्रभु एक कहाता
सकळ जगतमां नित्य भजाता
दीनबंधु भगवान अमारा....जय २
संकट टाळो पार उतारो
जन्म मरणनां दुःख संहारो
सकळ जगतना पालनहारा....जय ३
किंकर बाळक शीष नमावे
तुंही तुंही ना सहु जन गुण गावे
धर्म धुरंधर जग प्रतिपाळा....जय ४

३

[राग–मस्ती जगावनारा अपनाही रंग देखो]

भगवान मोरी नैयां
भव पार लगा देना
अबतक तो निभाया है
आगे भो निभा लेना–१

जंझट है कर्म केरो
उस मे भूलुं कदापि
तो नाथ महेर कर के
दील से न भूला देना–२

मद राग द्वेष चोरो
कहीं भो फसा दे हमको
तो नाथ महेर कर के
दील से न भूला देना–३

तुम नाथ मे हुं किंकर
तुम स्वामो मे हुं चाकर

यह बात सत्य हो तो
सत कर के बता देना–४

अगणित दोष हमरे
फीर भी है आश तेरी
सब भूल माफ कर के
अपना ही बना लेना–५

भवसिंधु मे भटकते
नर देह उंच पाया
अब नाथ तुं मीला तो
भक्ति मे झूला लेना–६

आश्रीत दास तेरे
मुख से पुकार करते
शांति सुधा व्रषा के
चरणो मे बुला लेना–७



४

[राग–बंदे जीवन है संग्राम

हरदम वंदन है भगवान
शांति सरिता मुज मन गीता
शांति तणा गुण ग्राम
मनवा शांति तणा गुण ग्राम–हरदम १

पळ पळ भजले कारज सजले
मन मंदिर के प्राण
मनवा मन मंदिर के प्राण–हरदम २

अब नहि छोडुं भवभय तोडुं
एक मुजे भगवान
मनवा एक मुजे भगवान–हरदम ३

पार लगादे शिव सुख पादे
जग जीवन भगवान
मनवा जग जीवन भगवान–हरदम ४

किंकर गावे शीष झूकावे
तुंही तुंही के तान
मनवा तुंही तुंही के तान–हरदम ५

८

[राग–प्रभु भेटीने आनंद थाय]

प्रभु नैनो मे ज्योति अपार
मोरी नैयां लगादे तुं पार–प्रभु

प्रीतलडी गुंथी मे भीतरका प्रेमसे
कैसे छुटेगा वो तार
आदी अनंतकी प्रीती हमारी
नैयां करेगा वो पार. प्रभु १

एकी प्रीतमजी एकी वालमजी
एको हमारे आधार
एकी जीणंदजी एकी जादवजी
एको हमारे दातार. प्रभु २

पळ पळमे नाम भजु भोळा भगवानका
गीतडाका करते गुंजार
मायाके संग झूके दुनियाके मानवी
कैसे तरे वो संसार. प्रभु ३

नैनोसे देखते जुठी है दुनिया
तोभी फसाते गमार
मतलबकी शोधमे मरता मूरखडा
पीछे करे वो पोकार. प्रभु ४

भक्तिकी धूनमे विरलाओ नाचता
भक्तिसे पावे किनार
किंकरका नाव झूले योगीके धाममे
बाजे उनोको सितार. प्रभु ५

६

[राग—आशावरी]

एक ही दे चीनगारी
बाबा एक ही दे चीनगारी

आभ जलाया ब्रह्म जलाया
झळकी ज्योत तुमारी
हम अंतरमे क्यूं नहि प्रगटी
विपत वही है भारी. बाबा १

पुरण प्रकाश छवाया चहु दिश
तेज दीसे मनोहारी
नाथ तुमारा चरण कमळका
मे हुं एक भिखारी. बाबा २

ज्योत अखंड जले तुम मंदिर
कबहु न खोट हुवारी
एक किरण दे बोत मुजे है
इतनी भीख हमारी. बाबा ३

भिक्षा जुज पूकारे बाळक
दान दीये दातारी
अब अंतरमे ज्योत जलादे
व्याकुळता मन भारी. बाबा ४

दिपक दिव्य रुपे प्रगटाया
झळक्यां तेज अपारी
किंकरको अब क्यूं नहि दीजीये
इजत बढेगी तुमारी. बाबा ५



७

[राग-आया द्वार तुमारे]

अबतो भिक्षा दे दे बाबा
अबतो भिक्षा दे दे
झोळी लेकर द्वार खडा हुं
एक ही चीपटी दे दे बाबा
अबतो भिक्षा दे दे. १
मायाकी नहि भीख हमारी
दो दीनकी है जगकी यारी
एक तुम्ही दातारी बाबा
अब तो भिक्षा दे दे. २
तन अग्नीको कोन बुझावे
नाव किनारे कैसे आवे
तुम बीन पार न पावे बाबा
अबतो भिक्षा दे दे. ३
ढूंड चूका मे सब संसारा
कोइ न देखा साथ हमारा

आप मीला आधारा बाबा
अबतो भिक्षा दे दे. ४

अब तो भूख मीटा दे स्वामी
तुंही तुंही मन अंतरयामी

पाय पडुं शीर नामी बाबा
अबतो भिक्षा दे दे. ५

क्यूं तलसाते नाथ निरंजन
मे हुं एक तुम्हो पे रंजन

भीड भागत भवभंजन बाबा
अबतो भिक्षा दे दे. ६

जन्म मरणकी व्याधि नासे
इतनी भीख तुमारी पासे

तव किंकर कहलाशे बाबा
अबतो भिक्षा दे दे. ७



८

[राग–मे निशदिन श्याम श्याम करती]

प्रभु प्रभु हैया के हार
पळ पळ पळ पळ भजतो
मे अपना वैभव जान माल
सब हो अर्पण करतो. प्रभु १
जिंदगानी सव उनकी खातर
यह दुनियामे को न बिरादर
मे निशदिन मन मंदिरके द्वार
उनकी धून धखवतो. प्रभु २
जग साथे नहि संग हमारा
फीर भी नाच नचाते प्यारा
मे संग कीया है तारणहार
उनकी ज्योत जगवतो. प्रभु ३
एक दीन आना एक दीन जाना
जुठ जगतमे क्यूं पटकाना

मे अपना माल बचा दे यार
उनकी महोबत करतो. प्रभु ४

क्युं तलसाते नाथ नगीना
आप हमारे केसर भीना
मे पीयु पीयु करके पोकार
अपनी आग बुझवतो. प्रभु ५

छोड दीया अब सब जंजाळा
प्रभु प्रभुकी एकही माळा
मे उनका किंकर बनने काज
जय जय गीत बजवतो. प्रभु ६



९

[राग—आबू पर्वत गजावे अरे योगो तुं]

शांति शांतिका झंडा जगतमे फीरे
सारी दुनियामे रोशन उनोका जले
भक्ति करनेसे भवभय के संकट टळे. शांति १

पुन्यशाळी को शरणा प्रभुका मीले
भक्ति सागरमे अज्ञानी कैसे झीले
नाथ कैसे मीले नाथ कैसे मीले. शांति २

कोन कहांसे चले कोन कहांसे चले
आत्म धनको तुं ले आत्भ धनको तुं ले
दिव्य दिपक जले दिव्य दिपक जले. शांति ३

कोइ कीश्ना भजे कोइ रामा भजे
भेदभावो भींतरसे वीराओ तजे
भक्ति श्रद्धा विना नाथ कैसे रीझे. शांति ४

जळ बीना वाडीमे पुष्प कैसे खीले
भक्ति बीन मुक्तिके पंथ कैसे मीले
योगी चरणोमे किंकर निरंतर झूले. शांति ५



१०

[राग–उपरनो]

तेरे मंदिरमे कैसे मे आवुं प्रभु
प्यास दर्शनको कैसे छीपावुं प्रभु. १

बहोत वर्षों के स्वप्ने बिताये प्रभु
तोभी रोशन मुजे ना दिखाया प्रभु. २

मेरी अरजी कीसी से सूनावुं प्रभु
तेरे चरणोका बाळक बना हुं प्रभु. ३

मेरे भींतरमे अग्नी जली है प्रभु
उसी अग्नीको कैसे बुझावुं प्रभु. ४

नित्य धूनीमे तेरी जलावुं प्रभु
मेरे नयनोमे आंसु वर्षावुं प्रभु. ५

प्राण प्यारा तुम्हीको स्वीकारुं प्रभु
मेरे कर्मोकी कथनी गुजारुं प्रभु. ६

दया करदे ये किंकर तुमारे प्रभु
तेरे मंदिरमे हमको बुलाले प्रभु. ७



११

[राग–पहाडी]

चार दिनोका मेळा
दुनिया चार दिनोका मेळा

कीसने पाया सुख मायामे
कीसने पाया सुख कायामे
आखोर सब अंधेरा
दुनिया चार दिनोका मेळा. १

आज आया कल कर तैयारी
मतलबके है सब संसारी
कोइ न तेरा तेरा
दुनिया चार दिनोका मेळा. २

फीर भी मूरख भान विसारी
बाण लगाते ज्युं शिकारी
मोह रीपुने घेरा
दुनिया चार दिनोका मेळा. ३

दया धरमको कीसने जाना
पर दुःखमे विरला पटकाना
भव अटवी का फेरा
दुनिया चार दिनोका मेळा. ४

मूरख मनवा कर भलाइ
वो जीवनकी है सगाइ
गीर पडेगा डेरा
दुनिया चार दिनोका मेळा. ५

किंकर बाळ निरख गभराना
अपना जगमे नहि समजाना
एकही नाथ हमेरा
दुनिया चार दिनोका मेळा. ६

१२

[राग—रवारण हो मारे नेसलडे]

नैयांने तारवा रे हो वेलेरा आव जो
भवथी उगारवा रे हो प्रेमे पधार जो. १
कर्म रुप दरीयामां मोटुं तोफान छे
कांठो बतावबा रे हो वेलेरा आव जो. २
चेतनजी निरखीने मनमां मुंझाय छे
पार केम पामु रे हो वेलेरा आव जो. ३
मोह मस्त आवीने आडा पड्या छे
न्हावडुं बचावबा रे हो वेलेरा आव जो. ४
साचो नाविक प्रभो परमातम नाथ तुं
वल्लभजी अंतरना हो वेलेरा आव जो. ५
भवभयना बंध केम तोडुं वालम जो
स्हाय मने त्हारी रे हो वेलेरा आव जो. ६
दुःखडां निवार जो सिंधुथी तार जो
किंकर उगारवा रे हो वेलेरा आव जो. ७

१३

[राग–तेरे पूजन को भगवान]

अबतो दया कोये भगवान
प्रभुजी मन मंदिर के प्राण
करु में नित्य तुमारा गान
प्रभुजी मन मंदिर के प्राण–१

मन हरखावु तन हरखावु
आप मुजे भगवान है
सदा रहु गुलतान
प्रभुजी मन मंदिर के प्राण–२

शांति सुधाकी अम्रत प्याली
मनकी प्यास छोपाती है
तुंही तुंही के तान
प्रभुजी मन मंदिर के प्राण–३

कोन बुझावे आग भींतरनी
विरला घून धखाता है

सोहम सोहम ध्यान
प्रभुजी मन मंदिर के प्राण–४

अविनाशी अकलंक अरुपी
अविचळ नाद बजाता है
अजर अमर सुख धाम
प्रभुजी मन मंदिर के प्राण–५

किंकर मन में एक नगीना
घट में ज्योत जगाया है
एक मुजे भगवान
प्रभुजी मन मंदिर के प्राण–६



१४

[राग–उपरनो]

निरंजन नाथ प्रभो भगवान
करो मन मंदिरीयामां स्थान
करुं में नित्य तुमारा ध्यान
करो मन मंदिरीयामां स्थान–१

त्रिलोक केरा नाथ गवाया
त्रिभुवन तारणहार रे
व्रषावी अम्रत रसनु पान
करो मन मंदिरीयामां स्थान–२

आत्म अखंडानंदनां
झरण पीलावो आपरे
मचावुं अंतरमां हुं तान
करो मन मंदिरीयामां स्थान–३

आप अखंड स्वरुप छो
अविनाशी पद धार रे
दयाळु दीनबंधु भगवान
करो मन मंदिरीयामां स्थान–४

नाथ अनाथ सनाथ छो
साचा सर्जन हार रे
प्रभुजी अंतरना छो प्राण
करो मन मंदिरीयामां स्थान–५

दीन बाळक हुं आपनो
किंकर उरमां धारो रे
त्हमारां सर्व करे गुणगान
करो मन मंदिरीयामां स्थान—६

१५

[राग—ओ नाथ तमारी मनहर मूर्ति जोइ जोइ मन ललचाय]

हुं भान भूली अथडायो जगमां
हवे थशे शुं नाथ—टेक.

में हसते हसते कीधां
दुःखीयाने दुःख बहु दीधां
विष पान मुखेथी पीधां
मारुं हवे थशे शुं नाथ....हुं १

मायामां खेल गुमायो
महा क्रूर बनी भटकायो
जुलमी नर हुं कहेवायो
मारुं हवे थशे शुं नाथ....हुं २

प्रभु नाम हृदय ना आयु
निज केरु भान भूलायु
आतमनु नहि समजायु
मारुं हवे थशे शुं नाथ....हुं ३

करतां नहि कोइ विचारे
भोगवतां त्राय पूकारे
त्यां प्रभु प्रभु संभारे
मारुं हवे थशे शुं नाथ....हुं ४

सुत मात पिताने नारी
जुठी सहु दुनियादारी
प्रभु नित्य भजो भय हारी
साचा अनाथना ए नाथ....हुं ५

आ अरजी नाथ स्वीकारो
दीन दुःखीया बाळ उगारो
किंकरने डूबता तारो
झालो हवे अमारो हाथ....हुं ६

१६

[राग–हे रंगभीना नेम नगीना]

नाथ निरंजन भवभय भंजम
नित्य हृदयमां ध्यावो रे
भव दुःख भंजन पाप निकंदन
दुःखडां दूर भगावो रे. १

अकळ अरुपी ब्रह्म स्वरुपी
झगमग ज्योत जगावो रे
दिव्य स्वरुप ओ नाथ तुमारुं
बाळकने बतलावो रे. २

नाथ निहाळो संकट टाळो
तुम बीन नहि आधारो रे
भव नगरीमां भूला पडेला
रस्ते आप चढावो रे. ३

अम्रत जळ अम पर वरसावो
साचो स्नेह व्रषावो रे

भक्त तणी भीड दूर करीने
ज्योतिसे ज्योत मीलावो रे. ४

पाय पडु हुं नाथ तुमारा
अरज हृदयमां ध्यावो रे
किंकर कहे आ दीन दुःखीयानो
नैया पार लगावो रे. ५



१७

[गझल]

दया सिंधु दया सिंधु
दया करजे दया करजे
हवे आ जंझटोमांथी
मने जल्दी छुटो करजे....१

नथी आ ताप सहेवाता
भभूकी कर्मनो ज्वाळा
वषावो प्रेमनी धारा
हृदयनी आग बुझवजे....२

बधी शक्ति विरामी छे
तुंहो आशे भ्रमण करतो
प्रभुताना कटोराथी
भीतरनी प्यास छोपवजे....३

घवायो मोहनी साथे
नयनथी आंसुडां सारु
रुझावी घा कलेजाना
मधुरी वासना भरजे....४

पूरायो हंस पिंजरमां
उडी ए क्यां हवे जाशे
भले सारो अगर बुरो
निभायो तेम निभवजे....५

करुं पोकार हुं त्हारा
जपु छुं रात दीन प्यारा
विनंती ध्यानमां लइने
दुःखी आ बाळ रीझवजे....६

झूलावी भक्तिना झोले
भवोनां बंधनो टाळो
कहे किंकर प्रभो प्यारा
अमर करजे अमर करजे....७



१८

[कवाली]

रुठे आ जगतना लोको
कदी ना रुठशो बापु
अमोनी एक क्यारीथी
नहि तलसावशो बापु....१
जुठी दुनिया तणी बाजी
मर्या एमां घणा पाजी
छतां भक्ति सरितामां
मने न्हवरावशो बापु...२
भले मारो अगर तारो
प्रभुजी एक तुं मारो

વ્રષાવી પ્રેમની ધારા
કલેજાં ઠારજો બાપુ....૩
અમરજ્યોતિ અમરજ્યોતિ
ઝળકતી ચો દિશા માંહે
મને એ દિવ્ય જ્યોતિથી
જુદો કરશો નહિ બાપુ....૪
લીધો છે ટેક મોંઘેરી
ભૂલુ ના પ્રાણના ભોગે
પ્રભુતાના હિંચોળામાં
મને હુલરાવશો બાપુ....૫
પિતા માતા જીવન દાતા
જગતમાં નિત્ય ભજવાતા
નીતી ને સત્યનાં સૂત્રો
જીવનમાં પુરજો બાપુ....૬
ત્હમારા નેત્રની ઝાંખી
ભિખારી બાળમાં કરજો
દિવાના દાસ કિંકરને
હૃદયમાં રાખજો બાપુ....૭



१९

[कवाली]

भला भगवान बतलादो
मेरा उद्धार कैसे हो
कृपाळु नाथ बतलादो
मेरा उद्धार कैसे हो....१

भयानक युद्ध कर्मोका
चला भवसिंधुमे भारी
घबायो मोह के संगे
मेरा उद्धार कैसे हो....२

जुठी हे जग्तकी माया
फसाया जाण होकर मे
कुकर्मो घोर हो कीधां
मेरा उद्धार कैसे हो....३

वनिता पुत्र के कारन
ढूंढा संसार सागरमे
बना पागल बना पागल
मेरा उद्धार कैसे हो....४

अतिशय जुल्म है मेरा
कीया सब शेर सम हो के
सताया रंक मानवको
मेरा उद्धार कैसे हो....५

अमोलां आपके वचनो
भूलो मे नींदमे सोता
नहि शोचा कभी घटमे
मेरा उद्धार कैसे हो....६

दया कर ओ दयासिंधु
शरण सच्चा तुमारा है
बतादो अब क्षमा करके
मेरा उद्धार कैसे हो....७

पीडा हरते त्रिभुवनकी
वहां पर तुच्छ मेतो हुं
दिवाना दास किंकर कहे
मेरा उद्धार कैसे हो....८



२०

[गझल]

अगरजो तुं नहि रीझे
तो तेरी साथ निस्बत क्या
बनादे नहि मुजे तेरा
तो तेरी साथ महोबत क्या–१

भूख्या को अन्न तुं देते
सकळ संसार यह कहेते
न मानु बात ए सची
जगत साथे तुमारे क्या–२

गुंथी हे कर्मकी जाळो
पुरव के पुन्य संभारो
भले हो रंक के राया
उनी साथे प्रभुको क्या–३

निरंजन तुं निराळा तुं
सदा निरलेप मय हे तुं

अरुपी नाथ ईश्वर तुं
रुपी साथे तुमारे क्या–४

खजाना आत्मलक्ष्मीसे
भरा हे नाथ मंदिरमे
वीना करणो नहि पाते
नयन आंसु गीरे तो क्या–५

सुखी हे कोन दुनियामे
समजना बहोत मुशकील हे
भीतरका मेल नहि धोया
पीछे पूजन कीया तो क्या–६

झूका हुं मे तुंही चरणे
लगन तेरी लगन तेरी
कहे किंकर प्रभो मेरा
रीझे या ना रीझे तो क्या–७



२१

[हिंदी गझल]

शरणोमे आ चूका हुं
चाहे तारो या न तारो
तुंही चर्णमे झूका हुं
चाहे तारो या न तारो ...१

चोराशी लाख फेरा
तुं एक हे हमेरा
जपता हुं नाम तेरा
चाहे तारो या न तारो....२

कर्मो अति कीया मे
शोचा कभी न घटमे
अब आंसुडां ब्रषावुं
चाहे तारो या न तारो....३

मायाके संग फसके
निजकी कीया खुवारी

मुज दोष है अपारी
चाहे तारो या न तारो....४

दीजीये क्षमा कृपाळु
नादान मे तुमारा
तेरा मुजे सहारा
चाहे तारो या न तारो....५

दुःखडां सभी निवारो
अरजी प्रभो स्वीकारो
भगवान तुं अमारो
चाहे तारो या न तारो....६

किंकर कहे पूकारी
सब आप के भिखारो
लगनी मुजे तुमारी
चाहे तारो या न तारो....७



२२

[गझल]

जगतना मानवी जो जो
नयन खोली दिशा चारे
भूलां शाने भमो शाणा
त्हमारुं छे तमो पासे....१

नहि मंदिरमां भासे
नहि वैभव मही वासे
नथी मळतुं अवर पासे
त्हमारुं छे तमो पासे....२

भूलीने तन मही खोजो
अरेरे धन मही खोजो
भीतर खोली जरा जो जो
त्हमारुं छे तमो पासे....३

ढूंडो दुनिया बधी तोये
त्हमारुं नहि दीसे कोये

परायामां छतां मोहे
 ह्मारुं छे तमो पासे....४

दिवाना थइ झूक्या शाणा
 अभागी कंइक अथडाणा
लुंटाया राजवी राणा
 ह्मारुं छे तमो पासे....५

मथ्या छे कंईक मस्ताना
 जीवनना तारने ताण्या
परायामां दीठु ना ना
 ह्मारुं छे तमो पासे....६

हृदयना मेलने धोजो
 पछी मन मंदिर जो जो
दिवाना दास किंकर कहे
 ह्मारुं छे तमो पासे....७



२३

[गझल]

बीजानी भूल जोनारा भूलो तुं ताहरी जो जे
परायां पाप धोनारा तुं त्हारा पापने जो जे...१
बीजाने तुं कहे पापी भर्युं छे पाप त्हारामां
हृदय मंदिरनी मांहे नयन खोली जरा जो जे...२
अवरनो न्याय करनारा करे नहि न्याय पोतानो
पराया श्राप लेनारा गुन्हा तुं ताहरा जो जे...३
नथी तुं कोइनो दुश्मन न त्हारो कोई दुश्मन छे
क्षमावी सर्व जीवोने जगत तुं मित्रसम जो जे...४
निहाळ्या दोष नहि तारा भर्या त्हें पापना भारा
टपकती आंसुनी धारा तुं त्हारा हाथथी लोजे...५
भीतरनां चक्षुओ खोली पछी तुं मागजे माफी
वषावी भक्तिनी धारा करेलां पाप तुं धोजे...६
हजी छे हाथमां बाजी करो कीरतारने राजी
दिवाना दास किंकर कहे सदा तुं ताहरुं जो जे...७



२४

[गझल]

अमे मस्तान मस्ताना जीवन मस्ती जगावीशुं
सरिता सत्यनी घटमां अमे नित्ये वहावीशुं.१
नथी ए काम कायरनुं वीराओनी विभूती छे
छतां आ देह पर भस्मी अमे एनी लगावीशुं.२
दुःखोना डुंगरो तूटे वपे अपवादनी हेली
छतां शांति तणा झोले अमे मनडुं झूलावीशुं.३
जगत माया अति मेली मणीमय मोहनी एनी
धूनी सोहम तणी घटमां अमे नित्ये जगावीशुं.४
कृपाळु नाथनो दिपक झळकतो विश्वनी मांहे
अमे ए दिव्य रोशनथी जीवन उज्वळ बनावीशुं.५
नथी शक्ति अमारामां छतां पण एज निश्चय छे
हृदय मंदिरनी मांहे वीणा जय जय बजावीशुं.६
गुन्हा अपारध बाळकना प्रभो प्यारा करो माफी
दिवाना दास बनवाने जीवन निर्मळ बनावीशुं.७



२५

[गझल]

जनारा जाय छे जीवन
अरे रे कंइक करतो जा
प्रभुना पंथे जावाने
सडक तुं साफ करतो जा....१

चोराशी लाख फेरामां
अनंति वार तुं भमीयो
थवाने मुक्त एमांथी
सडक तुं साफ करतो जा....२

धूनी भक्ति तणी साची
मूकी तुं क्यां मुंडा भटके
जीवन ज्योति जगाववाने
सडक तुं साफ करतो जा....३

जगतनी चो दीशा जोतां
महा अंधार भासे छे
नथी कंइ मार्ग देखातो
सडक तुं साफ करतो जा....४

फस्या सहु मोह मायामां
मधु रस चाखवा माटे
तजी ए विष मायानु
सडक तुं साफ करतो जा....५

छुट्या नहि कोइ मायाथी
अजब जादु अजब जादु
नजुमी भोमीयो शोधो
सडक तुं साफ करतो जा....६

जीवन मृत्यु नहि आवे
अमर आनंद ज्यां पावे
भवोना बंध हरवाने
सडक तुं साफ करतो जा....७

रडे तुं जेहना माटे
नथी त्हारुं थवानुं ए
दिवाना दास किंकर कहे
सडक तुं साफ करतो जा....८

२६

[कवाली]

हवे आ जिंदगी मांहे
निराशाने निशासा शा ?
समर्प्युं सर्व भावीने
पछी खोटा दीलासा शा....१

जगत वैभव भले सारा
थवाना ए नथी व्हारा
छतां ए अल्प मायामां
विवादो ने विलापो शा....२

ललाटे लेख अंकाया
बुरा सारा निभावाना
पछी आ जिंदगी मांहे
कढापा ने बळापा शा....३

हृदय धीखतु सदा व्हारु
नथी शांति पलक मांहे

छतां आ जिंदगी माहे
अमारा ने त्हमारा शा....४

मरे जीवे रडे कुटे
जवानो सर्व ए पंथे
पछी वहेवारना फंदे
जीवनना मोह खोटा शा....५

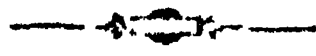
कर्यो निरधार अंतरमां
जीहां निजनु तमे भासो
पछी आ विश्वनी मांहे
परायाना भरोसा शा....६

तमे क्षण एक नहि भूलो
पछी ए केम विसारे
तफडतां ने फफडतां पण
प्रभोनो एक छे आशा....७

त्हमारा श्वास ने प्राणो
पराधीन पिंजरे पूर्या

पछी आ जिंदगी मांहे
दिवाळी ने दशेरा शा....८

त्हमे पण एक दीन किंकर
जवाना जिंदगी त्यागी
पछीथी आ जीवन मांहे
निराशा ने निसासा शा....९



२७

[राग–तेड थयुं कीरतारनुं]

शाने रडे छे तुं हवे
त्हारु थवानु नहि कदी
भावी लख्युं ते थाय छे
मिथ्या थवानु नहि कदी...१

त्हारा अने मारा मही
आखुं जगत रोया करे
पक्षी तणो माळो दीसे
त्हारु थवानु नहि कदी...२

पत्नी कहे भरथारने
प्रियतम तमे छो माह्रा
मारा वधा रोता रह्या
ह्हारु थवानु नहि कदी...३

जुठां जगत पुष्पो बधां
खोल्यां तुरत करमाय छे
आखर फना थइ जाय छे
ह्हारु थवानु नहि कदी...४

राजा वसे छे महेलमां
झोला हिंडोळे झूलतो
अंते जतो ए एकलो
ह्हारु थवानु नहि कदी...५

थेली भरो परमार्थनी
लक्ष्मी जीवननो एज छे
किंकर कहे एना विना
भमशो भूलां भवनी मही...६



२८

[राग-छोटासा बलमा मेरे आंगणेमे गील्ली खेले]

नैयां तुं तार जीणंदा
एक सकळ जगके आधारा
दुःखडां तुं वार जीणंदा
एक सकळ जगके आधारा...१

ज्योति झगमगतो तुमरी
विश्वमही हो जयजयकारा
घट घटमे रोशन झळके
प्राण प्रभु मन मंदिर प्यारा...२

भवसिंधु ढुंढ चूका जब
आप मीला मुजको आधारा
अब क्यूं तलसाते मुजको
बाळ बना दे नाथ तुमारा...३

निशदीन मे नाम पूकारुं
तुंही तुंही मन एक हमारा

फीरभी नहि ध्यान लगाते
आप मुजे हो तारणहारा...४

भिक्षुक मे बाळ तुमारा
आप दयाळु दीन दातारा
अरजी अंतरमे धारो
नाथ तुमी हो पालनहारा...५

मायाने बोत सताया
पुन्य प्रतापे दर्शन पाया
किंकर को पार लगादे
तुंही तुंही भगवान मनाया...६

२९

[प्रभातीयुं–झूलणा छंद]

जाग तुं जाग तुं जाग मन निंद्थी
नित्य भगवंतनु नाम भजले
एह विण कोइ नहि जग्तमां ताहरुं
भक्ति जळनु सदा पान करले...१

राय महाराय चक्री बधा चालीया
कंइक नैनो थकी र्‍हें निहाळया
जगत माया जुठी सर्व रहेशे अहीं
नित्य भगवंतनु नाम भजले...२

पुत्र नारी अने स्वजन परिवार सहु
कर्मयोगे वन्युं आज र्‍हारु
मोह माटे रडे सर्व तुज नामने
नित्य भगवंतनु नाम भजले...३

क्यां थकी आवीयो क्यां जवानो हवे
एह तुं शोध जल्दी करी ले
निंदमां वर्षनां वर्ष वीती गयां
नित्य भगवंतनु नाम भज ले...४

नित्य प्रभुने भजो पुन्य कारज सजो
गांठडो आत्म धननी भरी ले
कहे किंकर प्रभो शांति योगीशनो
नित्य भगवंतनु नाम भज ले...५

३०

[गरबो]

प्राण प्यारा प्रीतमजी अरजी स्वीकारजो
आव्या म्हारा आंगणे

भीख भक्तिनी मागी ए भिखारी
म्हारा चरणे पडे वारी वारी
अमे भक्तिनी भीखने स्वीकारी प्रीतमजी
आव्या म्हारा आंगणे...१

कर्म आंधी चडी छे अपारी
दुःखो जन्म मरणनां भारी
अमे अंतरथी हाम हवे हारी प्रीतमजी
आव्या म्हारा आंगणे...२

मोह माया जीवनमां विकासी
एना बंधनथी जीव गयो त्रासी
म्हारी ज्योति जगतमां प्रकाशो प्रीतमजी
आव्या म्हारा आंगणे...३

प्रभु ज्योतिथी पाप नाश थाशे
पछी मनडामां तान उभराशे
बाळ नित्ये तुंही गुण गाशे प्रीतमजी
आव्या त्हमारा आंगणे...४

त्रिविध अग्नीना तापने बुझावो
क्षमा शांतिनां जळ वरसावो
दास किंकरमां तान उभरावो प्रीतमजी
आव्या त्हमारा आंगणे...५

३१

[राग–माढ]

प्रभु प्राणथी प्यारा दुःख हरनारा
मुज हैयाना हार
आप विना प्रभु कोण अमारो
नाद सूणे कीरतार
भव अटवीमां भमतां भमतां
मळीयो तुं आधार रे ...प्रभु १

जुठ प्रपंच तणो जाळोमां
सपडायो वार वार
जाण छतां में हरषे कीधां
दोष तणो नहि पार रे ...प्रभु २
पुन्य प्रतापे भान थयुं तो
नाम भजु कीरतार
करुणा सागर पार उतारो
बाळक हुं निरधार रे ...प्रभु ३
भक्ति सुधानी धार व्रषे तो
रोमे रोम भीजाय
स्नान करी हुं पाप पखाळुं
मेल सहु धोवाय रे ...प्रभु ४
भव भय भंजन पाप निकंदन
नैयां तारणहार
आप अनाथ सनाथ कहाया
किंकर पार उतार रे ...प्रभु ५

३२

[राग-मोहे प्रेमके झोले झूलादे कोई]

मोरी नैयां के नावी बतादे कोइ
मोरी नैयां किनार लगादे कोइ

सागर वीचमे नाव फसाया
हांकने वाले बोत मुझाया
भव नावसे मुजको छुडादे कोइ ...मोरी १

मोह मधु रस प्रेम कटोरा
महेल बगीचा खाट हिंचोळा
उन मोजमे प्रभुको पूकारे कोइ ...मोरी २

जोवन झूलते मीठी मीठी लहेरे
अंगपे कफनी इश्ककी पहेरे
फीर आंसु बपाते हे रोइ रोइ ...मोरी ३

लक्ष चोराशी चक्कके आंटा
कर्म रीपुसे कंइक खवाता
शुभ करणी बीना न छुडाते कोइ ...मोरी ४

किंकर मन भगवान निराळो
नैयां हमारी बचाने वालो
मोरी नैयां के नावी तुंहोरे तुंही ...मोरी ५



३३

[राग–आशावरी]

राखो अमारी लाज
प्रभुजी राखो अमारी लाज–टेक.

भ्रमण कर्युं मे सब दुनिया मे
कोइ न मळीयो साथ
सब देवोकु देखी लीया पन
मीलो न कोइ सनाथ ...प्रभु १

माता भमीयो महादेव भमीयो
भमीयो सब संसार
गोमती तीरे स्नान कीयां पण
मीलो न तारणहार ...प्रभु २

टेके फळे छे टेके मळे छे
निश्चय बळ हो अपार
शीर जावे श्रद्धा नहि जावे
कबहो न तूटे तार ...प्रभु ३

सब दोषनकुं आप निवारो
महेर कीये शीरताज
माफ कीये सब भुल प्रभुजी
उरमे आणो दाझ ...प्रभु ४

दीन बाळक में नाथ तुमारा
चरण पडु वारंवार
किंकर बाळक पळ पळ सुमरे
तारो हमारा जहाज ...प्रभु ५



३४

[राग–वसंत]

निंद उडादे न्हावलीया हमरी
आश मुजे तुमरी...निंद

रेन विताइ तेज छवाया झगमग ज्योत झरी
सब संसारी खोलत नैनो
आश कोसीने पुरी ...निंद १

घुंट घुंट के घोळ बनाया प्रेम के पान भरी
मायादेवी के लाडकवाया
प्यास छोपी मनरी ...निंद २

मस्तीरस विरलाने पाया प्रीत तजो जगरी
नाव झूलाया अविचळ पंथे
भव के दुःख हरी ...निंद ३

में दुनिया के एक दिवाना भक्ति के संग करी
अपनी मोज मही मे फीरता
तुंही तुंही तान वरी ...निंद ४

मोह मजाको स्वजन लुंटे निजकी गत विसरी
किंकर बाळक पळ पळ सुमरे
एक हो नाथ हरी...निंद ५

३५

[रक्त टपकती सो सो झोळी समरांगणथी आवे]

त्रिभुवनपती आ अर्ज स्वीकारो
नाथ हृदयमां धारो
डूबतो हुं दीन बाळक त्हारो
भवथी पार उतारो
ळळी ळळो लागु चरणे रे
मुजने महेर करीने तारो...१

भमरो थइ भव नगरे भमीयो
मोह पुरीमां रमीयो
माया देवीनो संग करीने
अध वच्चे आथडीयो
रडतो रडतो विनवुं रे
नाथ दया आ दीन पर धारो...२

आप तणां अमूलां वचनोने
भूली खरे भटकाणो
नाथ विचार्या नहि में घटमां
रोझ बनी अथडाणो
दुर्गुण अवधि मारा रे
दीन दुःखीयाने पार उतारो...३
माया देवीनी दुष्ट खाइमां
जाण छतां पटकाणो
अंध बनी खाडामां पडीयो
अति करुं बूमराणो
फरतुं सैन्य मोहनु रे
निरखी मनमां हुं गभराणो...४
मदिरा पीने मेड बने तीम
मद दारु में पीधो
निशा मही चकचूर बनीने
नर भव एळे कीधो
सघळुं आप पिछाणो रे
स्वामी आप थको नहि छानु...५

घणु कह्युं थोडामां समजी
हाथ हवे प्रभु झालो
करगरतो बाळक विनवे छे
अरजी नाथ स्वीकारो

रडतो किंकर बाळक रे
मुजने भव सिंधुथी तारो...६



३६

[राग—आलममां डंका बजवाया]

दुनियामां ज्योत जगवनारा
भगवान अमोने पार करो

कथनो छे क्रूर अति मारी
थाक्यो छुं हाम हवे हारी

दीनबंधु जगना उपकारी
भगवान अमोने पार करो—१

भवचक्र मही फसीयो फंदे
माया ने मोह तणा छंदे

लळो लळो चेतन तुजने वंदे
भगवान अमोने पार करो—२

ओ अंतरयामी उर धारो
दीन दुःखीयानां संकट टाळो
वल्लभजी एक तुंही मारो
भगवान अमोने पार करो—३

भमतां भमतां शरणे आयो
ओ नाथ तुंही दर्शन पायो
भक्ति रस घटमां उभरायो
भगवान अमोने पार करो—४

किंकरने स्हाय करो प्यारा
जगजीवन नाथ तमे मारा
निशदिन हुं जाप जपुं त्हारा
भगवान अमोने पार करो—५

३७

[राग–जाओ जाओ रे मेरे साधु]

भजलो भजलो ओ जगना प्राणी
भजो सदा कीरतार....टेक.

एह विना भाइ कोइ नहि जगमां
साचो परम दयाळ
त्रिभुवन नायक शिवसुख दायक
प्रभु भज वारंवार....भज १

अनेक भवना पुन्ये पायो
मानव भव अतिसार
फेर फेर ए मळवो दुलहो
प्रभु भज वारंवार....भज २

जग सहु जुठा मतलब केरा
मतलब का संसार
प्रभु भक्ति बिन कोइ नहि तेरा
प्रभु भज वारंवार....भज ३

पुत्र मित्र सहु पंखी मेळो
उडी जशे एक वार
नाथ निरंजन भव दुःख भंजन
प्रभु भज वारंवार....भज ४

एक दिन हंस जशे घटमांथी
रडतो रहे परिवार
किंकर कहे अणधार्या जावुं
मालीकना दरबार....भज ५



३८

[राग–धन्य भाग्य अमारां आज पधार्या मोंघेरा महेमान]

कृपा करी भगवान अमारा
अंतरमां वसजो

सदा हुं जाप जपुं त्हारा
प्रभुजी प्राण थकी प्यारा
घटघटनी सहु आप पिछाणो
अंतरमां वसजो....१

मने आधार हवे ह्हारो
भूलोथी नाथ सदा वारो
भवदुःख भंजन पाप निकंदन
अंतरमां वसजो....२

नयनमां नाथ तने भाळु
शरण छे एक मने ह्हारुं
परम कृपाळु आप दयाळु
अंतरमां वसजो....३

कृपा दातार कृपा करजो
भवोभवनां बंधन हरजो
त्रिभुवन नायक शिवसुख दायक
अंतरमां वसजो ...४

वसो छो विश्व मही स्वामी
तुंहो किर्ती जुगमां जामी
बाळक किंकरदास तणा
मन मंदिरमां वसजो....५

३९

[राग-नथी जगतमां साथ सबंधी विना त्रिभुवन नाथ]

फोगट फांफां मार
मूरखडा नथी जगतमां सार
भजीले झट कीरतार
मूरखडा नथी जगतमां सार....टेक.

कुटुंब कबीलो कोइ नहि म्हारु
नारी सुत परिवार
स्वार्थ सबंधे मळीयां सर्वे
प्रभु भज वारंवार
मूरखडा नथी जगतमां सार....१

काया जुठी माया जुठी
जुठो जग वहेवार
दुनियादारी सघळी जुठी
जुठ भर्या संसार
मूरखडा नथी जगतमां सार....२

मायामां र्हे खेल गूमायो
फर्यो अनंति वार
शरण एक जीनवरनु साचु
ए विण नहि आधार
मूरखडा नथी जगतमां सार....३

त्रिभुवन नायक शिवसुख दायक
साचो छे आधार
भवभय भंजन पाप निकंदन
नैयां तारणहार
मूरखडा नथी जगतमां सार....४

किंकर कहे भवसिंधु तरवा
भजो सदा कीरतार
एह विना भाइ कोइ नहि जगमां
दीन बंधु दातर
मूरखडा नथी जगतमां सार....५

४०

[राग—मैं बनकी चीडीयां]

भगवान तुमारो बाळ गणीने
तारो रे
हुं भान भूली भटकायो
आप उगारो रे

रडवडीयो मानव संसारे
जन्म मरणनां दुःखडां भारे
ओ दीनबंधु भगवान
दुःखी ने तारो रे....भगवान १

चोराशी चक्करमां फरीयो
पुन्य प्रतापे नर भव मळीयो
हुं अंध बनी अथडायो
आप उगारो रे....भगवान २

घोर घटा नयनोमां भासे
तुम ज्योतिने केम प्रकाषे

ओ जगजीवन भगवान
दुःखो ने तारो रे....भगवान ३

साथ कर्यो मे नाथ तुमारो
कोइ नहि जगमां आधारो

हुं ळळी ळळी विनवुं
भवसिंधुथी तारो रे....भगवान ४

तुंही तुंही मन मंदिर प्यारो
जन्म मरणनां दुःख संहारो

ओ अवीनाशी
तुम किंकर पार उतारो रे....भगवान ५



४१

[राग–थइ प्रेम वश पातळीया]

भव भयनां बंधन टळीयां रे
भगवान साचा मळीया....टेक

प्रभु नाथ निरंजन स्वामी
शिव सुख पदवीना स्वामी
अविनाशी अंतरयामी रे
भगवान साचा मळीया....१

त्रण भुवन मही भजवाया
दीनबंधु नाथ कहाया
आनंद मंगळ वर्तीया रे
भगवान साचा मळीया....२

नैनोमां मूर्ती त्हारी
दीन दुःख भंजन दातारी
मन मंदिर धून अपारी रे
भगवान साचा मळीया....३

प्रभु अजर अमर कहेवाया
परमातम रुप धराया
घटघटमां नित्य पूजाया रे
भगवान साचा मळीया....४

प्रीते हाथ ग्रहो प्रभु मारो
किंकरने पार उतारो
तुं एक मने आधारो रे
भगवान साचा मळीया....५



४२

[राग–पहाडी]

प्रभुजी मागुं हुं ते आप
गुरुजी मागुं हुं ते आप

ना मागुं धन माल खजानो
आप तणा गुण वाद
सेवा करतां नित्य तुमारी
आवे नहि संताप ....प्रभुजी १

तुज भक्तिमां मस्त बनीने
सदा रहुं आबाद
निशदीन घटमां नाम तुमारु
सदा जपुं हुं जाप ....प्रभुजी २

दुःखडां सर्वे दूर करीने
शांति वहावो नाथ
तुज खातर हुं शीष समर्पु
हिंमत धरुं अमाप ....प्रभुजो ३

शब्द पडे आ रोम रोममां
त्रिलोक केरा नाथ
सदा रहो मुज मन मंदिरमां
मूर्ति त्हारी स्थाप ....प्रभुजी ४

नैन उघाडुं चोदीश भाळुं
आप अनाथ सनाथ
किंकर कहे आ दीन बाळकना
भवना दुःखने काप ....प्रभुजी ५



४३

[राग–मोहे लागी लटक गुरु चरणनकी]

मोरी नैयांको पार उतार गुरु
तुम बीन कोइ नहि पार करेगा
भवसिंघुसे तार गुरु....मोरी १
सारा जगको देख लीया जब
एक मीला आधार गुरु....मोरी २
जन्म मरणका अवधि दुःखसे
कोइ न तारणहार गुरु....मोरी ३
ढूंक चूका मे भव अटवीको
जुठ भरा संसार गुरु....मोरी ४
विश्व विशारद विपत निवारक
शांत सुधा पानार गुरु....मोरी ५
अलख मचाया ब्रह्म जगाया
ज्योति जगावन हार गुरु...मोरी ६
किंकर बाळक पळ पळ सुमरे
एको मुजे आधार गुरु...मोरी ७

१

स्तुति

जय अंतरयामी
पार करो शिवगामी....जय.

तुं परमेश्वर साचो वल्लभ तुं मारो
दुःखडां दूर करनारो जय अंतरयामी १
विश्व थकी तुं न्यारो ब्रह्म जगवनारो
सकळ जगतने प्यारो जय अंतरयामी २
घटघट व्यापक स्वामी नाथ निरंजन तुं
भव भंजन भय हर तुं जय अंतरयामी ३
पुन्य प्रतापे बाळक तुम शरणे आयो
अखोलपति कहेवायो जय अंतरयामी ४
निभव्या तेम निभवजो दीन बंधु दाता
अनाथ जन गुणगाता जय अंतरयामी ५
एक मने आधारो बाळक हुं त्हारो
किंकर पार उतारो जय अंतरयामी ६

०-२-० पोस्टेज मोकलनारने आ भजननी चोपडी
भेट तरीके मोकलवामां आवशे

नीचेनां पुस्तको अवश्य मनन करो

वैराग्य तरंग अने गुरुकाव्य गुंजन

वैराग्य वचनामृतो

ज्योतिनां किरणो

गुरु कीर्तन

टुंक समयमां बहार पडशे

देवांशी संत के नारणदास

गत कालना महान पुरुषोनी

गांधी अने ऐक्यभाव

कल्पना पंथे हृदयनी छोळो

प्राप्ति स्थान
मास्तर रूपचंद हेमचंद
देलवाडा-माउन्टआबु.